दुःख का कारण अज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवों के चौरासी लाख उत्पत्ति स्थान है। मनुष्य आयुष्य कर्म को पूरा करके अगला जन्म प्राप्त करता है। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार जन्म मरण के चक्र में भटकता रहता है। कर्मों के भुगतान के लिए यह जीवन चक्र चलता रहता है। कर्ता ही सुख–दुःख की अनुभूति करता है। दुःख कोई नहीं चाहता, सुख की इच्छा सभी करते हैं, फिर भी दुःख की प्राप्ति हो जाते हैं। यह सनातन सत्य है कि सुख देने से सुख की प्राप्ति होती है और दुःख देने से दुःख की प्राप्ति। किन्तु मानव दूसरों को कष्ट देना चाहता है और अपने को आराम देना चाहता है। उसकी यह सोच ही उसके दुःख का कारण है यही सबसे बड़ा अज्ञान है। इसीलिए कहा गया है कि दुःख का कारण अज्ञान है।

राग, द्वेष, कषाय दुःख के कारण हैं। दुःख या अज्ञान को ज्ञान से दूर किया जा सकता है। अपने को जानना स्वभाव में स्थिर रहना ज्ञान है विभाग में जाना अज्ञान है। मनुष्य की इच्छाएं जितनी बढ़ती है उतना उसको दुःख की प्राप्ति होती है। इच्छा आकाश के समान अनन्त है उसको कभी पूरा नहीं किया जा सकता। एक इच्छा पूरी हुई कि दूसरी तैयार खड़ी रहती है। इच्छाओं को कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। इच्छाओं की पूर्ति न होने पर दुःख होता है। मनुष्य अनैतिक कार्य करता है जिससे दुःख होता है। वह अज्ञान में भ्रमण करता रहता है। दैहिक, दैविक और भौतिक तीन प्रकार के कष्ट बतलाये गये हैं। सांख्य दर्शन में पुरुष और प्रकृति दो तत्व माने गये हैं। पुरुष को आत्मा और प्रकृति को जड़ कहा गया है। दोनों का सम्बन्ध अज्ञान के कारण होता है।

अज्ञानता अंधकार है और ज्ञान प्रकाश है। दीप स्वयं जलता है और दूसरों को भी प्रकाशित करता है। घने अंधकार में कुछ भी दिखाई नहीं देता। यदि हम कुछ खोजने चलते हैं तो ठोकर लगने से गिर भी सकते हैं। ज्ञान का आत्मा का स्वरूप है। जिसने आत्मतत्त्व को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया। भगवान महावीर एक छोटे से प्राणी में पूरा ब्रहमाण्ड देखते

थे। भगवान बुद्ध ने सत्य के लिए चार आर्य सत्यों को उपदेश दिया। चार आर्य सत्यों का ज्ञान वास्तविक सत्य है। यह अज्ञानता को दूर करने वाला है।

घने अंधकार में यदि एक छोटा सा दीपक जला दिया जाता है तो वह अंधकार को नष्ट कर देता है। ज्ञान भी दीपक के समान है। ज्ञान सुख का खजाना है और अज्ञान दुख का। अज्ञानता के दूर होते ही सुख का खजाना मिल जाता है। यह शरीर मेरा है, यह घर मेरा है, यह वस्तु मेरी है यही अज्ञान या अंहकार है। अज्ञान का शरीर से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं इसी को अज्ञान कहते हैं। कर्ता भाव अज्ञान है। कोई भी कार्य अकेले नहीं होता। कई कारणों के संयोग से कार्य सम्पन्न होता है। किन्तु इसको मैंने किया इस भाव का आना अज्ञान को जन्म देता है। ज्ञाता दृष्टा भाव होना चाहिए। यह भाव होना चाहिए कि मैं शुद्ध आत्मा हूॅ। पदार्थ बाह्य तत्व है ये मेरे नहीं हैं और मैं इनका नहीं हूॅ। यह ज्ञान सबको होना चाहिए। हमें भीतर की ओर देखना चाहिए। हमें यह मानना चाहिए कि जन्म–जन्मान्तर के किये गये कार्यों के परिणाम स्वरूप शरीर प्राप्त हुआ है। यह शरीर भोगायतन है। भोग के लिए यह शरीर प्राप्त हुआ है।

आत्मा जब तक इस शरीर में रहती है तब तक इसका मूल्य है। आत्मा के निकलने के बाद शरीर पंचतत्व में विलीन हो जाता है। पुराने कर्मों का विनाश और नये कर्मों का रूकना आवश्यक है। तभी जीव कर्म से मुक्त हो सकता है। संसार का अंधकार सूर्य के प्रकाश से दूर हो जाता है किन्तु अंदर का अंधकार इतना गहन होता है कि उसे करोड़ों सूर्य का प्रकाश भी दूर नहीं कर सकता। उस अंधकार को दूर करने के लिए ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता होती है। वह आत्मज्ञान से ही दूर हो सकता है। अतः कर्मों के आवरण को हटाकर स्वप्रकाशी आत्मा का ज्ञान होना चाहिए।

इस संसार में हर प्राणी जीना चाहता है मरना कोई नहीं चाहता है। सभी चाहते है कि मेरा जीवन सुखमय रहे। इस संसार में मानव पर जैसे ही कष्ट आता है। वैसे ही वह तनाव में आ जाता है। अनुकूलता सभी चाहते हैं, प्रतिकूलता कोई नहीं चाहता है। अनुकूलता और प्रतिकूलता जीवन में आने वाले दो पढ़ाव हैं। कोई अच्छी बात जब हम सुनते हैं तो वह हमारे अनुकूल रहती है और हम प्रसन्न हो जाते हैं। जैसे ही हम कोई बुरी बात सुनते हैं और वह

हमारे प्रतिकूल रहती है और हम दुःखी हो जाते हैं। सुख और दुःख का यह द्वन्द्व जीवन भर चलता रहता है।

हमारे यहां शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में अनेक धर्म–दर्शन पढ़ाये जाते हैं, जहां पर सुख और दुःख की दार्शनिक व्याख्या की जाती है। दुःख क्या है? क्यों आता है? दुःख का कारण क्या है? इसको कैसे दूर किया जा सकता है इत्यादि बातों की दार्शनिक मीमांसा प्रायः सभी दर्शन करते हैं। दर्शन में दुःख को अज्ञान, अविद्या, माया, मिथ्यात्व कहा जाता है। अज्ञान और ज्ञान दो चीजे हैं। अज्ञान दुःख है और ज्ञान सही समझ है। दुःख का कारण मूल रूप से अज्ञान ही है। जब मानव वस्तु के यथार्थ स्वरूप को समझ नहीं पाता तो वह अज्ञान में जीता है। जड़ वस्तुओं में विश्वास करना अज्ञानता है और आत्मा में विश्वास करना ज्ञान है।